AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

सिंधु सभ्यता का एशियाई देशों के साथ व्यापार संबंध

ORIGINAL ARTICLE

Author
जितेश कुमार
इतिहास विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

शोध सार

प्रथम नगरीकरण की सभ्यता के रूप में सिंधु सभ्यता सतलुज, रावी और सिंधु घाटियों के तट पर विकसित हुई। इसके उत्खनन दौरान सभ्यता की संस्कृति, व्यापार तथा सामाजिक संबंधो के कई साक्ष्य देखे गए (चक्रवर्ती,1990)। तत्पश्चात, इसके नगरीकरण होने के साक्ष्य मिलने के बाद पुरातत्वविदों द्वारा इस सभ्यता के अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंधो के बारे में पता लगाया गया। अफगान, ईरान, और मेसोपोटामिया आदि के साथ हडप्पा सभ्यता का व्यापारिक संबंध पाया गया (चक्रवर्ती,1990)। मेसोपोटामिया से एक मुहर की प्राप्ति हुई, जिससे हडप्पा और मेसोपोटामिया के व्यापार–वाणिज्य संबंध उजागर होते है (क्राफोर्ड,1973)। इनके बीच यह व्यापार जलमार्ग द्वारा होता था, जिसके कारण बंदरगाहों की उपस्थिति भी हड़प्पा सभ्यता में पाई गई। इस शोध मे हड़प्पा सभ्यता के व्यापार में आभूषणों और आयात निर्यात सामान का उल्लेख किया गया है। इसमें हड़प्पा सभ्यता के मृदभांडों मे भी उल्लेख किया गया है। अतः यह व्यापार–वाणिज्य संबंध हड़प्पा को इतिहास में प्रथम नगरीकरण की सभ्यता की के रूप में रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द

सिंधु सभ्यता, एशियाई देश–ईरान, अफगान, मेसोपोटामिया, व्यापार.

परिचय

हड़प्पा संस्कृति के स्वर्ण युग की जानकारी तीसरी सहस्राब्दी ई.पू में मिलती है। इसके बारे में कनिंघम, मार्शल, मैके. व्हीलर, थापर, केसलर ने शोध करके विश्व को इससे परिचित करवाया। 1920–30 के दशक में जब इस सभ्यता का पता चला तो तब से इसकी स्थलो की संख्या में लगातार वृद्धि हुई, जिससे हमे प्राक हड़प्पा, परिपक्व हडप्पा और उत्तरी हड़प्पा की खोज से उसके विस्तृत स्वरूप का पता चलता है। हड़प्पा, राखीगढ़ी और धौलावीरा जैसे स्थलो की खुदाई मे सभ्यता के विकास और पतन को समझने में काफी मदद की है।

हड़प्पा का एशियाई देशों के साथ व्यापार हड़प्पा को फारस की खाड़ी के माध्यम से भूमध्यसागरीय क्षेत्रों के देशों के साथ जोड़ता है जिसकी पुष्टि खुदाई से मिली व्यापार–मूर्तियां करती है कि हड़प्पा और सुमेरियन के बीच व्यापार और आपसी संपर्क था। मोती और आभूषण निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तु थी।

सिंधु के शहरी स्वरूप ने देश के आंतरिक और बाह्य व्यापार को प्रोत्साहन दिया। ईरान से, सिंधु कार्लेनियन लम्बे मोती पाए है,जो व्यापारिक गतिविधियों को दर्शाता है। मोहनजोदड़ो और चनहूंदड़ों के समान ही उर और किश

की खुदाई में मोतियों की समानता मिलती है। इस मोतियों का स्वरूप चनहूंदड़ों, कालीबंगा और हड़प्पा के समान है। हडप्पा और सुमेरियन में व्यापरिक समानता एक और व्यापारिक दृष्टिकोण को प्रदान करती है। (कैस्पर, 1972)

अस्थाना, जिसने पहले अध्ययनों को हवाला दिया था, सिंधु और भूमध्यसागरीय की खुदाई में फियांस, सोना, मनके के आकार की खोज की गई है। इन्होंने उनके लिए उत्पत्ति का एक सामान्य बिंदु सुझाया। (अस्थाना,1993)। सिधु मनका उद्योग के विकसित होने के कारण बाजार और उपभोक्ता की मांग थी जिसके कारण सिंधु कारीगरों ने इस उद्योग में विशेषज्ञता प्राप्त की। सिंधुवासियों के लिए एशियाई देशों के साथ व्यापार संसाधनों और उत्पादों एवं माल के वितरण करने के लिए अधिक था।

एक अध्ययन के अनुसार, अर्धकीमती पत्थर संसाधनों के दोहन से, कई हडप्पा विनिर्माण केंद्र जैसे लोथल, चनहूंदड़ों, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो के कारीगरों ने अपने नजदीकी और दूरदराज क्षेत्रों से कच्चे माल को प्राप्त कर तैयार माल का वितरण किया और मोतीयों का निर्माण अभिजात वर्ग की आवश्यकतानुरूप किया। केनोयर चनहूंदड़ों और हड़प्पा जैसे विनिर्माण केंद्रो में लंबे, बेलनाकार, कार्लेनियन मोतियों का निर्माण होता था और बाद में इनका वितरण व्यापारिक रूप से अलग अलग शहरो में और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दिया गया था। (Kenoyal et al. 1994)

सिंधु सभ्यता के उपजाऊ मैदान घाटी के सभी प्रमुख केंद्रो का केंद्र बिंदु थे, जिससे आसपास ही कच्चे माल की प्राप्ति आसानी से हो जाती थी, लेकिन इन पर नियंत्रण किसका था इसका पता लगाना कठिन है। उपलब्ध आँकड़ो के अनुसार जलोढ मैदान, सौराष्ट्र और गुजरात का एक व्यापक हिस्सा सिंधु सभ्यता के आंतरिक व्यापार को कवर करता है। शोतुघई (अफगानिस्तान) में अकेले में हड़प्पाई स्थलो की खोज की गई, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सभी स्थल हड़प्पा के व्यापार क्षेत्र के भाग थे। हमें बलूचिस्तान के बारे में कम पता है, जहां सिंधु कस्बों और कुल्ली संस्कृति के स्थलों की खोज की गई (डेल्स,1976)। गुजरात में सूतकांगेडोर एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में ज्ञात है, जबकि मीरी कलात (बेसेनवल 1994) एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। अतः इससे यह जानकारी मिलती है कि बलूचिस्तान के स्थल सिंधु घाटी में आंतरिक व्यापार के संबंधों को दर्शाते है। चर्ट, कार्लेनियन पत्थर और मूसल आदि सामाग्रियों को सर्वोत्तम रखा है। बाट और तराजू की उपपस्थिति जो आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों को दर्शाते है, आंतरिक व्यापार और विनियिम की स्थिति से भी अवगत कराते है।

उत्पादन और व्यापार संगठन, साथ ही आंतरिक व्यापार नेटवर्क के प्रारूप, इनका अध्ययन विभिन्न समुद्री प्रजातियो से निर्मित शैल चूड़ियों का उपयोग करके बनाया गया। इनमें समुद्री घोंघा, बाइबेल्व टीवेला आदि का उपयोग आभूषण और सजावट सामान एवम् चूड़ियों के निर्माण के लिए किया जाता था। उदाहरण के लिए बालाकोट स्थल (डेल्स और केनोयर 1977) पर टिवेला क्षति का उत्पादन देखा गया (केनयोर, 1983)। लोथल और हडप्पा (केनयोर, 1979) मे शंख के टुकड़ों का अध्ययन – कुछ चूड़िया आंतरिक और बाहय देशी मे पहनी जाती थी । नागेश्वर स्थल से निर्मित चूड़िया और कर्छूल को हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में व्यापार के लिए भेजा जाता था (भान और केनोयर 1980)। लंबे कार्नेलियन मोती इस लेख में विशेष महत्व रखते हैं और चनहूंदड़ों एकमात्र स्थान हैं जहां पर इतने लंबे मोतियों की प्राप्ति हुई (मैके,1943)।

यद्यपि उनकी विशिष्ट उत्पत्ति अभी अज्ञात है, रतनपुर की बजरी में व्यापक स्तर कार्लेनियन नोड्यूलों की प्राप्ति हुई है (केनोयर, 1991)। यह कम जानकारी है कि इतने सख्त पत्थरो को ड्रिल करने के लिए सामग्री का किस प्रकार से उपयोग किया जाता था। अर्नेस्ट मैके के सम्मान में इसे 'अर्नेस्टाइट' नाम दिया गया (केनोयर, 1992)।

प्राचीन इतिहास मे व्यापार–वाणिज्य नेटवर्क (लैम्बर्ग, कलार्क) के लिए कई सिद्धांतो का विषय रहा है, लेकिन सिंधु घाटी मे लिपि पढ़ने के अभाव में व्यापक स्तर पर परीक्षण नही हो पाए है। लेकिन बड़े शहरों और आसपास के क्षेत्रों के बीच व्यापार व्यापक था।

ऐसा पता चलता है कि हडप्पा काल मे नेटवर्क स्सतरीकरण के अलावा विनिमय की कम से कम तीन प्रमुख प्रणालियां थी (केनोयर 1998) जैसे एक केंद्रीयकृत सता जो व्यापार पर नियंत्रण रखती थी और उत्पादो पर दरो

का निर्धारण करती थीं। हाल के हडप्पा अध्ययन से पता चला है, एक ऐसी स्थिति जहां उत्पादों के प्रवेश करते या छोड़ते समय ट्रैक किया जा सकता था और कर लगाया जा सकता था (केनोयर, 1991)

अन्य दो व्यापार प्रणालिया बिना किसी पुरातात्विक साक्ष्य के काल्पनिक प्रकृति की है। एक तो वस्तु–विनिमय प्रणाली जिसमें अनाज या वस्तुओ के बदले व्यापार होता था। दूसरी, सेवाओं के बदले वस्तुओ का व्यापार होता था, जो पुरातात्विक साक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट नही करते है। यह प्रणाली दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में विशिष्ट है, यहां ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यापरिक–पैटर्न दिखाई देता है (केनोयर, 1989)। एक महत्वपूर्ण पहलू यह सामने आता है कि लंबी दूरी के व्यापार के लिए सरकारी नीतियां नही बल्कि अभिजात वर्ग जिम्मेदार है। (केनोयर,1989)

बाह्य व्यापार

हालांकि इस संदर्भ में काफ़ी प्रमाण है कि हड़प्पाई लोगों का बाहरी देशो के साथ व्यापारिक संबंध अच्छा था। एशियाई देशो के साथ व्यापार संबंध विकसित करने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संचार के विभिन्न तरीके अपनाए। मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंधों की व्याख्या का आंकलन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि अधिकतर डेटा आँकड़े पहले से खुदाई के है जिसमे रिकार्ड दस्तावेज शामिल नहीं थे (मूरे, 1997)। सिंधु में चनहूंदड़ों मोतियों के निर्माण के साथ से कही अधिक सुसंगत है।

हम जानते है कि मेसोपोटामिया के आंतरिक और बाहय व्यापार में साक्ष्यों की कमी के कारण काफी विभिन्नताएं थी(गेल्ब,1970)। साहित्यिक स्रोत भी पुष्टि करते है कि सिंधु घाटी के मेलुहा लोग अकादियन काल के दौरान मेसोपोटामिया में रहते थे और स्थानीय संस्कृति में आत्मसात हो गए। (पारपोला,1977)

मेसोपोटामिया के उत्खनन से बेलनाकार मोती और नक्काशीदार मोतियों की प्राप्ति हुई है। हालांकि ऐसे मोती, सिंधु सभ्यता से व्यापारिक संबंधो के कारण ही प्राप्त हुए है, क्योंकि मेसोपोटामिया में यह असामान्य थे (मैके 1929)। ईरान, अफगानिस्तान से भी इन मोतियों का खोजा जाना, हड़प्पाई लोगों का बाहरी देशों के साथ संपर्क दर्शाता है। (वेले– 2006)

निष्कर्ष

उपरोक्त उदाहरणों से पता चलता है कि सिंधु और अन्य एशियाई सभ्यताओं के बीच संबंधों के बारे में अभी भी बहुत कुछ सीखा जाना बाकी है। प्रस्तुत शोध पत्र के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता के एशियाई देशों के साथ जैसे तुर्की, खाड़ी देशों, अफगानिस्तान, ईरान और मेसोपोटामिया के साथ काफी संबंध और व्यापार थे। इन देशों से विभिन्न प्रकार के मोती, खनिज पदार्थ, घोड़े, मनके, मर्तबान तथा मिट्टी के खिलौने प्राप्त होते हैं। हड़प्पा और हड़प्पा से संबंधित वस्तुएं, ज्यादातर सिर और मुहरें दक्षिण और उत्तरी इराक दोनों से आती हैं।

संदर्भ सूची

1. चक्रवर्ती, डी.के. (1990) *सिन्धु सभ्यता का बाह्य व्यापार,* नई दिल्ली मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स 5–20।
2. क्रॉफर्ड, हैरियट एलिजाबेथ वाल्स्टन (1973) तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में मेसोपोटामिया का अदृश्य निर्यात, यूनाइटेड किंगडम विश्व पुरातत्व 232–241।
3. डेल्स, जॉर्ज एफ. (1962) *मकरान तट पर हड़प्पा चौकियाँ,* पुरातनता 36.पृ. 142: 86–92।
4. डेल्स, जॉर्ज एफ डेल्स, जॉर्ज एफ और कार्ल पीएलआईपीओ (1992) *मकरान तट पर अन्वेषण, पाकिस्तान स्वर्ग की खोज,* बर्कलेः पुरातत्व अनुसंधान सुविधा का योगदान, संख्या 50।
5. मैके, एमेस्ट जॉन हेनरी (1943) न्यू हेवन चान्हु–दारो उत्खनन बोस्टन अमेरिकन ओरिएंटल सीरीज 20. 1935–36
6. मूरे, पीटर रोजर स्टुअर्ट (1994) *प्राचीन मेसोपोटामिया सामग्री और उद्योग,* इंग्लैंडः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी

प्रेस; 130–141।

7. केनोयर, जोनाथन मार्क (1983) सिंधु सभ्यता के शैल कार्य उद्योगरू एक पुरातत्व और नृवंशविज्ञान परिप्रेक्ष्य, बर्कले प्रोक्वेस्ट शोध प्रबंध प्रकाशन 49–63।
8. केनोयर, जोनाथन मार्क (1992) सिंधु परंपरा की आभूषण शैलियाँः हड़प्पा, पाकिस्तान में हाल की खुदाई से साक्ष्य, *फ़्रांस पेलियोरिएंट* वॉल्यूम 17, नंबर 2 79–98।
9. केनोयर, जोनाथन मार्क और रिचर्ड एच. मीडो (1999) हड़प्पा की उत्पत्ति और विकास पर नई खोजें लाहौर *संग्रहालय बुलेटिन* XII 1–11।
10. चार्ल्स लियोनार्ड (1934) उर उत्खनन, वॉल्यूम II: शाही कब्रिस्तान, लंदन और फिलाडेल्फियाः 330–343।

——==00==——